AIJRELPLS VOLUME 10, ISSUE 1 (2025, JAN/FEB) (ISSN-2456-3897)ONLINE
Anveshana's International Journal Of Research In Education, Literature, Psychology And Library Sciences

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का आधार– अहिंसा की अवधारणा के संबंध में

सुचि जैन
शोधार्थी,
राजनीतिक विज्ञान संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

डॉ. रश्मि सोमवंशी
शोध निर्देशक,
राजनीतिक विज्ञान संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

शोध आलेख सार

यह शोध पत्र महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के प्रमुख आधार अहिंसा की अवधारणा के संबध में है जो वर्तमान में इसकी भूमिका का विश्लेषण करता है, भारतीय संस्कृति में अहिंसा की अवधारण प्राचीनकाल से ही विभिन्न रूपों में पल्लवित व विकसित होती रही है। अंहिसा वस्तुतः भारतीय संस्कृतिक धरोहर का प्राणतत्व है, जिसका प्रभाव हमारे दार्शनिक विश्लेषणों, धार्मिक विवेचनों, सामाजिक संगठनों और राजनैतिक क्रियाकलापों में सरलता से देखा जा सकता है। समय– समय पर अनेकानेक महापुरुष बुद्ध, महावीर, नामक, कबीर आदि ने अहिंसा के विभिन्न स्वरूपों का प्रतिपादन किया। आधुनिक युग में गांधीजी अहिंसा के सफलतम प्रयोगकर्त्ताओं में माने जाते हैं। अहिंसा के विधेयात्मक पहलुओं को उन्होंने विभिन्न धर्म शास्त्रों व मतों से प्रभावित होकर लिया, जिसमें जैन दर्शन का स्थान प्रमुखता से आता है। अहिंसा को सिद्धान्त के धरातल से उठाकर राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में व्यवहार के धरातल पर प्रस्तुति इनकी मौलिक देन मानी जा सकती है, जिसको कालान्तर में व्यापक विस्तार मिला।

मुख्यशब्द– महात्मा गांधी, अहिंसा, मौलिक, राजनीतिक, विश्लेषण, अवधारणा

प्रस्तावना

महात्मा गांधी के अनुसार अहिंसा कोई ईश्वरीय वस्तु नहीं है। वरन् यह तो मानव व्यक्तित्व का गुण है। व्यक्तित्व के आत्मिक व शारीरिक दो पक्ष होते हैं। अहिंसा का संबंध आत्मिक पक्ष से है जो अन्ततः परम सत्ता से जुड़ा रहता है। अहिंसाशास्त्र में इसे एक मानसिक अवस्था के रूप में स्वीकारा गया है। विभिन्न दर्शनों में मतों में भी अहिंसा के मानसिक व आंतरिक पक्ष को महत्त्व दिया गया है। जैन दर्शन में भी कहा गया है कि प्राणघात हिंसा नहीं है बल्कि राग–द्वेष आदि भाव हिंसा है। और पर घात न होने पर भी मन में हिंसा का भाव रखना हिंसा ही है। इसी प्रकार विनोबा के अनुसार अहिंसा के संदर्भ में भी विचारों का

संतुलन कायम रखने और बुद्धि की समता न डिगने देने का नाम अहिंसा है। गांधी भी जैन दर्शन से प्रभावित होने के कारण अहिंसा के मानसिक पक्ष को स्वीकारते थे। अहिंसा का भाव या विचार तो मन में उत्पन्न होता है लेकिन इसका प्रकटीकरण मनुष्य के व्यवहार में होता है। गांधी जीवोन्मुख विकासशील अहिंसा में विश्वास करते थे। वह इस पर नये–नये अनुसंधान करते रहे और जीवन को अहिंसा की तरफ मोड़ने का हर संभव प्रयास करते रहे। व्यावहारिक आदर्शवादी गांधी मानते थे कि अहिंसक विचार होने पर भी अहिंसक व्यवहार हो यह आवश्यक नहीं है। दुरुहरपूर्ण परिस्थितियों में अहिंसक विचार रहने पर भी हिंसक व्यवहार अपनाना पड़ता है। जब अहिंसा के नाम पर मानव अस्तित्व ही असंभव हो जाए तो अहिंसा किसी काम की नहीं है। उनके अनुसार मानव अपनी गरिमा व मर्यादा के अनुसार अहिंसक व्यवहार की सीमा तय करने के लिये स्वतत्रं है।

गांधीजी ने अहिंसा के तत्वमीमांसीय पक्ष की अपेक्षा नीतिगत पक्ष पर अधिक बल दिया। किन्तु उनका मानना था कि एक पक्ष को पूर्ण–रूपेण समझने के लिए दूसरे पक्ष का पूर्ण ज्ञान अत्यन्त अपेक्षित है। अहिंसा के दार्शनिक स्वरूप को भली प्रकार जानने से ही उसका व्यावहारिक पक्ष सबल बन सकता है।

साहित्य की समीक्षा

कौशिक आशा, ''गाँधी नयी सदी के लिए'', 2000, पुस्तक में गाँधी की व्यक्ति, समाज, राजनीति से संबद्ध अन्तर्दृष्टि की नवव्याख्या प्रस्तुत की गई है। जन कल्याण के लिये राजनीति का मूल कायाकल्प अनिवार्य है, यह स्वयं व्यक्ति के माध्यम से ही होगा। गाँधी अत्याधुनिक होते हुए भी पारंपरिक है एवं पारंपरिक होते हुए भी उत्तर आधुनिक है। भारतीय पुरूषार्थ परंपरा की जीवन्त कड़ी के रूप में गाँधी की प्रासंगिकता की व्याख्या की गई है। गाँधी के आंदोलेनो में स्त्रियों की भूमिका की विवेचना की गई है। गाँधी के विचार नैतिकता प्रधान होते हुए भी किस प्रकार व्यवहारिक राजनैतिक सरोकारों पर केन्द्रित थे इसके बारे में बताया गया है। गाँधी चिंतन के मूल्य भारतीय समाज की वस्तुस्थिति की ही उपज थे। राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक व्याख्याओं में भेद करने की आवश्यकताओं को उभारा गया है। गाँधी चिंतन में मानवीय न्याय, अधिकार एवं कर्तव्यों की पारस्परिकता के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है। पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र की विकृतियों का समाधान गाँधी के ग्राम आाधारित लोकतंत्र की अवधारणा में ही है। इसके बारे में बताया गया है।

जैन माणक,''गाँधी के विचारो ंकी 21वीं सदी में प्रासंगिकता'', 2010, पुस्तक को सात अध्यायों में विभक्त किया है। जिसमें गाँधीजी के सामाजिक और राजनीतिक विचारों का आधार अहिंसा है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अहिंसा का प्रयोग किस प्रकार किया गया, इस पुस्तक में खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन तथा अंत में भारत विभाजन के समय

अहिंसात्मक कार्यप्रणाली का विस्तृत विवेचन किया गया है। गाँधीजी द्वारा सामाजिक क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग करने से संबंधित विवरण इसमें वर्णित है, जिनमें हिन्दू–मुस्लिम सामंजस्य में अहिंसा का प्रयोग तथा महिलाओं के उत्थान में अहिंसा का प्रयोग एवं योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अहिंसक रीति–नीति से गाँधीजी के नेतृत्व में अस्पृश्यता का लेखा–जोखा प्रस्तुत कर उनके योगदान का मूल्यांकन किया गया है। गाँधीजी के स्वराज एवं ग्राम स्वराज संबंधी विचारों पर प्रकाश डालते हुए गाँधीजी के विभिन्न रचनात्मक कार्यो तथा ग्राम स्वराज के बुनियादी सिद्धांतो का विस्तृत वर्णन इसमें किया गया है।

त्यागी पी. के.,''भारतीय राजनीतिक विचारक'', 2013, पुस्तक में लेखक ने विभिन्न भारतीय मनीषियों के राजनैतिक विचारों को उद्धृत किया है। इसमें लेखक ने न केवल राजनीतिक नेताओं हिन्दू उदारवादियों तथा आध्यात्मिक राष्ट्रवादियों, उदारवादियों, उगव्रादियों तथा समाजवादियों के अपनी मातृभूमि को साम्राज्यवादियों की दासता से मुक्त करने के यत्नों का क्रमिक विश्लेषणात्मक वर्णन किया है वरन् उनके ऐसे सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों का विवेचन किया है, जिनका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

इसमे ंगाँधीजी के जीवन दर्शन, उनका जीवन दर्शन किससे प्रभावित रहा, धर्म व राजनीति मे ंसंबंध, गाँधीवाद की विशेषताएँ, अहिंसा की आवश्यकता, सुरक्षा के लिये अहिंसा का प्रयोग किस प्रकार किया जाय, सत्यागह्र, साध्य साधन की अवधारणा, आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

फड़िया बी. एल.,''अंतर्राष्ट्रीय संबंध'', 2017, पुस्तक में द्वितीय महायुद्ध के बाद किए शांति के प्रयास, विश्वयुद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय विकास, शीतयुद्ध की उत्पत्ति, विकास एवं अन्त तथा विश्व राजनीति पर उसका प्रभाव, संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य, भूमिका एवं उपलब्धियाँ, गटुनिरपेक्षता–उद्देश्य, विशेषताएँ एवं प्रासंगिकता, साम्यवादी गुट का बिखराव, एशिया एवं अफ्रीका में विउपनिवेशीकरण, अमेरिका, चीन, रूस एवं भारत की विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उभरती हुई नयी प्रवृतियाँ एवं मुद्दे, निःशस्त्रीकरण की समस्या एवं चुनौतियाँ, यूरोप में नई आर्थिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियाँ, दक्षिण–दक्षिण संवाद, उत्तर–दक्षिण संवाद, नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, एशिया मे ंक्षैत्रीय सहयोग संगठनों के संदर्भ में आसियान एवं सार्क के बारे में ंविस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन के उद्धेश्य

- महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के आधार के रूप में अहिंसा की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- अहिंसा का स्वरूप व प्रकारों की चर्चा करना।

शोध–प्राविधि

यह अध्ययन वर्तमान की परिपेक्ष्य पर आधारित है जिसमें आंकड़े द्वितीयक समंक पर आधरित है। आंकड़ों का संकलन पत्रिका, इन्टरनेट, शोध पत्र, इन्टरनेट में उपलब्ध गांधी की जीवनी इत्यादि पर आधारित है।

अहिंसा का स्वरूप

गांधी का विचार था कि अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है। वे अहिंसा और सत्य को परस्परावलम्बी और अभेदमूलक मानते थे। उनके शब्दों में अहिंसा ही ईश्वर का दर्शन करने का सीधा और छोटा मार्ग है। अहिंसा की परिभाषा करते हुए वे कहते हैं कि अहिंसा का अर्थ पूर्ण निर्दोषिता ही है। पूर्ण अहिंसा का अर्थ है– प्राणी मात्र के प्रति दुर्भाव का अभाव। वस्तुतः प्राणी मात्र के प्रति दुर्भाव का सर्वथा त्याग ही अहिंसा है। यह दुर्भाव का प्राणियों के प्रति समभाव का निर्वाह करना अहिंसा के विधायक स्वरूप का समर्थन करना है। उन्होंने कहा कि आदमी यदि अपने में वह शक्ति पैदा कर ले कि वह शेर, भालू आदि हिंसक पशुओं से भी प्रेम कर सके और बिना हत्या के काम चला सके तो उत्तम है। यहां उन्होंने वनों में साधना करने वाले साधुओं का उदाहरण दिया है।

अहिंसा को मानसिक स्थिति मानते हुए उन्होंने निर्देश दिया है कि इस स्थिति को अच्छी तरह समझने की अपेक्षा है। दैनिक जीवन से व्यवहार की वस्तुओं का त्याग करना ही अहिंसा नहीं कही जा सकती। अहिंसा कभी भी मजबूरी अथवा कायरता की पोषक की नहीं बन सकती। यह तो वीरों का धर्म है। उनके ही शब्दों में ''कायर व्यक्ति के द्वारा अहिंसा का पालन असंभव है।'' वे अहिंसा को जागृत आत्मा का गुण विशेष मानते हैं जिसकी सफल साधना बिना विचार, विवेक, वैराग्य, तपश्चर्या, समता एवं ज्ञान के नहीं हो सकती। यह अंधप्रेम भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अंधप्रेम में अज्ञानता होती है और अज्ञानता हिंसा का कारण है। गांधी के अनुसार सत्य की तरह अहिंसा श्रद्धा और अनुभूति का विषय है और एक सीमा के बाद तर्क का विषय नहीं है।

अहिंसा जितनी मन और बुद्धि की बात नहीं है उतनी हृदय और आत्मा का गुण है। अहिंसा के सफल प्रयोग के लिये प्रेममय ईश्वर तथा शरीर से अलग आत्मा के अस्तित्व में विश्वास आवश्यक है। गांधी के अनुसार प्रेम अहिंसा का दूसरा नाम है। वास्तव में प्रेम के रूप में अहिंसा सभी गुणों की जननी है। सत्य को ईश्वर के रूप में जानने का एक मात्र साधन प्रेम था अहिंसा ही है। विश्व का संचालन भी इसी अहिंसा या प्रेम के द्वारा होता है। जहां प्रेम है वहीं जीवन है। घृणा या हिंसा विनाश की ओर ले जाती है। अहिंसा सर्वकालीन व सर्वव्यापक नियम है जिसका जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में बिना किसी अपवाद के प्रयोग हो सकता है। गांधी कहते है कि अहिंसा की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि जब हम उसे अपने जीवन नियम के रूप में स्वीकारे तो उसका प्रयोग जीवन के केवल विशेष कार्यों तक ही सीमित न करे बल्कि

प्रत्येक क्षेत्र व कार्य अहिंसा पर आधारित हो। क्योंकि जब हम एक बार भी अहिंसा में हिंसा का समावेश करते है तो हम स्वयं नैतिक नियम के रूप में अहिंसा का निषेध करते हैं। इस प्रकार केवल अहिंसा की महत्वपूर्ण शक्ति है। गांधी ने अहिंसा की सूक्ष्म व्याख्या न कर उसे हिंसा की तरह संगठित किया तथा सभी को बताया कि अहिंसक केवल व्यक्तिगत गुण ही नहीं, अपितु ऐसा गुण है जिसका सामुहिक व सामाजिक उपयोग हो। गांधी ने बताया कि अहि ंसा से समाज परिष्कृत होता है, युद्ध को रोका जा सकता है और मानव संस्कृति को सुरम्य बनाया जा सकता है।

गांधी का विश्वास था कि सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान अहि ंसा द्वारा ही संभव है। अहिंसात्मक उपायों द्वारा ही उनका स्थायी हल प्राप्त किया जा सकता है। गांधी ने अहिंसा के मुख्यतः दो रूपों

- **निषेधात्मक**
- **विधेयात्मक की चर्चा की।**

- **निषेधात्मक अहिंसा**

निषेधात्मक अहिंसा का तात्पर्य है, किसी जीव की दुर्भावना से, क्रोध, स्वार्थवश या चोट पहुंचाने के इरादे से दुख न देना और न उसकी जान लेना। अर्थात् पृथ्वी के किसी जीव को मन, वचन, कर्म से चोट पहुंचाने से बचना। गांधी ने निषेधात्मक अहिंसा के दो रूप बतलाये हैं–

- **सूक्ष्म अहिंसा**
- **स्थल या बाह्य अहिंसा**

सूक्ष्म या आंतरिक अहिंसा के अन्तर्गत व्यक्ति में अक्रोध, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, आस्वाद, उत्पीड़न तथा दूसरे जीव को मन, वचन, कर्म से पीड़ा न देने के विचारों को समाहित किया जाता है। वहीं इन विचारों को क्रियान्विति देना स्थूल या बाह्य अहिंसा कहलाती है। गांधी ने कहा कि निषेधात्मक रूप से अहिंसक रहने के लिये यह भी आवश्यक है कि हमारे विचार उस व्यक्ति के बारे में भी अनुदान न हो जो हमारा शत्रु हो।

- **विधायक अहिंसा**

अक्सर भ्रम से अहिंसा केवल निषेधात्मक मान ली जाती है। गांधी के अनुसार अहिंसा आवश्यक रूप में विधायक और गत्यात्मक शक्ति है, और विधायक और क्रियात्मक रूप में अहिंसा का अर्थ है– प्रेम का विस्तारीकरण, मैत्रीभाव की जागृती, दया भाव का उदय तथा इन सब का आचरण। यह प्रेम केवल

मनुष्यों के लिये ही नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि के लिये है, फूलों, पौधों, हानिकारक कीड़ों और जानवरों के लिये भी। इस प्रकार क्रियात्मक रूप में अहिंसा सब जीवों प्रति सद्भावना है।

प्रसिद्ध गांधीवादी प्रो. एस.एन. तिवारी ने अपनी पुस्तक 'गांधी दर्शन' में लिखा है ''अहिंसा का अर्थ करूणा, मानवता, पौरूष, भद्रता, सरलता, शांति, हृदय की विशालता, दया, मैत्री, सेवा, त्याग, आत्मपीड़न, आस्था, विवेक, पवित्रता, विनम्रता, क्षमा, सहिष्णुता एवं सत्यवादिता है।''

गांधी जी के अनुसार विधायक अहिंसा की पुष्टि सभी जीवों के साथ एकता की अनुभूति में होती है। उन लोगों से भी प्रेम करना जो आपसे घृणा करते है, जिन पर आप विश्वास नहीं करते। इस प्रकार विधायक अहिंसा का अर्थ है— अधिक से अधिक प्रेम करना बुराई करने वाले के प्रति भी प्रेम। निरपेक्ष अहिंसा का तात्पर्य है हिंसा से पूर्ण मुक्ति। निरपेक्ष अहिंसा के दृष्टिकोण से प्रत्येक प्रकार की हिंसा त्याज्य है। यह अहिंसा की पूर्णता की स्थिति है, जो तभी संभव है जब मन, वचन, कर्म में पूर्ण अन्वय हो। इस प्रकार की अहिंसा केवल ईश्वर का गुण है। अपूर्ण मनुष्य जिस प्रकार पूर्ण निरपेक्ष सत्य को नहीं जान सकता, उसी प्रकार निरपेक्ष अहिंसा को भी जान सकता, और न उसे व्यवहार में उतार सकता है। गांधी के अनुसार सभी जीवों की एकता होने से समाज में जो भी हिंसा होती है उसके उत्तरदायित्व में समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का भाग है। इसके अतिरिक्त जीवन विनाश मनुष्य हिंसा से पूर्णतः मुक्त नहीं रह सकता है। खाने—पीते रहने, घूमने, फिरने, आत्मरक्षा के है।

गांधी के अनुसार यह मनुष्य की अपूर्णता के कारण है। ये जीवन के सर्वोच्च नियम के रूप में अहिंसा की मान्यता को अप्रमाणित करने वाले अपवाद नहीं हैं। जितना ही मनुष्य पूर्णता की ओर अग्रसर होगा, उतना ही संकटपूर्णता परिस्थितियों में अहिंसा की व्यावहारिक पद्धति का ज्ञान बढ़ेगा तथा हिंसात्मक युक्तियों के प्रयोग की आवश्यकता कम होगी। यदि मनुष्य को सच्चा अहिंसावादी है तो यह आवश्यक है कि जो अनिवार्य हिंसा उसे करनी पड़े वह स्वाभाविक हो, कम से कम हो, उसकी जड़ में दया हो और उसके पीछे विवेक, नियंत्रण और अनासक्ति हो।

अहिंसा के प्रकार

नैतिक दृष्टिकोण से गांधी ने अहिंसा के तीन प्रकार का स्तर बताए है—

- **जागृत अहिंसा**

यह अहिंसा का सर्वोत्कृष्ट रूप है। यह साधन सम्पन्न या वीरों की अहिंसा है। इस अहिंसा को मनुष्य संकट में आवश्यकता से विवश होकर नहीं, अपितु नैतिकता पर आधारित आन्तरिक विश्वास के कारण

ग्रहण करता है। यह अहिंसा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होती है। ऐसी अहिंसा स्वार्थयुक्त व हानि–लाभ पर आधारित नहीं होती है। यह किसी भी परिस्थिति में न झुकती है न मुंह मोड़ती है। जो लोग अहिंसा को जीवित नियम के रूप में स्वीकार कर लेते हैं वे संकटमय संघर्ष में भी मानवीयता एकता और भ्रातत्व की भावना को नहीं छोड़ते हैं। इन मनुष्यों में हिंसक प्रतिकार की भी पूर्ण क्षमता होती है, किन्तु अहिंसा में अपने अटूट विश्वास के कारण वे हिंसा का कभी सहारा नहीं लेते।

- **औचित्यपूर्ण या व्यवहारिक अहिंसा**

अहिंसा के इस रूप को जीवन के क्षेत्र में किसी विशेष आवश्यकता पड़ने पर, औचित्यानुसार एक नीति के रूप में अपनाया जाता है। गांधी जी इस अहिंसा को 'निर्बलों की अहिंसा' या निष्क्रिय प्रतिरोध कहते थे। इसमें नैतिक विश्वास के कारण नहीं, निर्बलता के कारण हिंसा का प्रयोग किया जाता है। फिर भी उसे यदि ईमानदारी साहस, और सावधनीपूर्वक एक नीति के रूप में अपनाया जाए तो इसमें कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। लेकिन यह जागृत अहिंसा के समान प्रभावशाली नहीं होती।

- **भीरूओं या कायरों की अहिंसा**

डरपोक और कायर व्यक्ति भी अहिंसक होने का दंभ भरते हैं, किन्तु उनकी यह प्रवृत्ति अहिंसा की नहीं कायरता या डरपोक व्यक्तियों की निष्क्रिय हिंसा कहलाती है। इसमें व्यक्ति डर के कारण संकट का सामना करने के बजाय उससे भाग जाता है तो नितांत अमानवीय व असम्माजनक है। गांधी के शब्दों में ''कायरता और अहिंसा पानी और आग के समान साथ नहीं रह सकते। गांधी के अनुसार अहिंसा वीरों का गुण है अपनी कायरता को अहिंसा की ओट में छिपाना निंदनीय व घृणित है।

निष्कर्ष

गाँधीजी ने अपने राजनीतिक विचारों से संबंधित कोई निश्चित रचना नहीं लिखी जिसके आधार पर उनके राजनैतिक विचारों को सिद्धांत रूप में समझा जा सके परन्तु उनके विचारों के मूल में एक सूत्र अवश्य मौजूद है जिसके आधार पर विभिन्न राजनैतिक विचारों को एक साथ पिरोया जा सकता है। यह सूत्र अहिंसा है। यहीं उनके समस्त विचारों का केंद्र भी है। गाँधी ने राज्य संस्था संबंधी अपने विश्लेषण में इसी अहिंसा को आधार बना कर विश्लेषण किया है।

गाँधी द्वारा अपने जीवन अनुभवों एवं वृहद अध्ययन के आधार पर आधुनिक राज्य संस्था की आलोचना की। अपने मूल रूप में हिंसक यह संस्था भारतीय संदर्भों के अनुकूल नहीं है। राज्य संस्था की आलोचना करते समय गाँधी उसकी तत्वमीमांसीय आलोचना प्रस्तुत करते हैं । एक राजनीतिक विचारक की भाँति उनके राज्य संबंधी विचारों में एकसूत्रता आसानी से खोजी जा सकती है। सम्प्रभुता

संबंधी उनकी अवधारणाएं भारतीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संदर्भों में आज भी महत्वपूर्ण है। भारतीय ग्रामीण परिदृश्य के मद्देनजर आज हमें स्थानीय पहल एवं भागीदारीमूलक लोकतंत्र की नितांत आवश्यकता है। साथ ही कठोर एवं अमानवीय नौकरशाही की हिंसा से मुक्त होकर स्थानीय समुदायों को सशक्त करना, उनके बीच अन्तर्सम्बन्ध बढ़ाना आज हमारा अभिप्रेत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सेठी जयदेव, ''गाँधी की प्रासंगिकता'', राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली, 1979
- शर्मा जी. रंजीत, ''एन इंट्रोडक्शन टू गाँधीयन थॉट'', एटलांटिक पब्लिशर्स, नईदिल्ली, 1991
- दुबे डॉ. श्यामा प्रसाद, ''आधुनिक राजनीतिक विचारधारा'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी दत्त डॉ. धीरेन्द्र मोहन, ''महात्मा गाँधी का दर्शन'', बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1973
- प्रसाद डॉ. उपेन्द्र, ''गाँधीवादी समाजवाद'', नमन प्रकाशन, नईदिल्ली, 2001
- पटेल एम. एस., ''एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गाँधी'' ''बुनियादी शिक्षा'', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1953
- ''विश्व शांति का अहिंसक मार्ग'', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1959
- संपूर्ण गाँधी वाङ्मय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार नईदिल्ली, 1961–1980
- हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1973–1982
- हॉरेस एलक्जेंडर, ''सोशल एण्ड पॉलिटिकल आइडियाज ऑफ महात्मा गाँधी'', इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, नईदिल्ली, 1949
- मिश्रा अनिल दत्ता, ''फंडामेटंल्स ऑफ गाँधीज्म'', मित्तल पब्लिकेशन्स, नईदिल्ली, 1995
- सूद चंदश्र ेखर, बहुगणु ाा निरंजना, ''अंतर्राष्ट्रीय राजनीति'', राधा पब्लिकेशन, नईदिल्ली, 2002
- सुधा खुश्बू, ''धर्म, राजनीति एवं मूल्यहीनता'', पॉइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, 1999
- सुथार डॉ. हुकमाराम, ''गाँधी और तिलक : धर्म एवं राष्ट्रवाद'', रितु पब्लिकेशन, जयपुर, 2015
- मिश्रा दामोदर, शुक्ला अखिल, ''मानवाधिकार दशा और दिशा'', पॉइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, 2016